''टीचर्स बहिनों के तीसरे ग्रुप में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश''

-- गुल्जार दादी

आज अमृतवेले बापदादा के पास गई और सदा के मुआफिक जाते ही दूर से बापदादा की दृष्टि मिलते ही लवलीन हो गई और सामने जाते ही अमूल्य हार बांहों में समा गई और लवलीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा बाबा आज निमित्त टीचर्स की तीसरी भट्ठी वालों की याद लाई हूँ। सब बहुत उमंग-उत्साह में हैं कि हम परिवर्तन जरूर करेंगे। बाबा बोले, बच्ची प्राप्ति भी तो अविनाशी है, अब इस परिवर्तन को अविनाशी बनाने के लिए खुद ही अपने को बार-बार चेक करते रहें और चार्ट रखें तो उमंग-उत्साह और ही बढ़ता रहेगा और निमित्त बहिनें भी सबको उत्साह दिलाती रहें तो वायदे का फायदा हो ही जायेगा। बापदादा ने देखा यह ग्रुप ही निमित्त है कोर्स का फोर्स कराने वाले या सेवा का फाउण्डेशन डालने वाले इसलिए बापदादा भी बच्चों पर खुश है कि वाह सेवा के साथी वाह बच्चे! कोटों में कोई तो बने हैं लेकिन अब वायदे का फायदा लेकर कोई में भी कोई बनने का उमंग-उत्साह रखना है।

बापदादा तो कहते हैं जो गायन है - बड़े तो बड़े लेकिन छोटे समान अल्लाह। तो ऐसे कमाल दिखाने वाले बनके दिखावें क्योंकि त्याग तो किया ही है। तो त्याग, तपस्या का फल सहज मिल सकता है। ऐसे कहते ऐसे लगा जैसे बाबा के नयनों में सब बच्चे समाये हुए हैं। बाबा बोले, आज बच्चों को भी वतन का सैर कराते हैं। बस बाबा का कहना और सबका इमर्ज होना। सब बड़े उमंग-उत्साह से बाबा के सामने वतन में पहुंच गये और ऐसी दृष्टि द्वारा लवलीन हो गये जो उनकी मूर्त से दिखाई दे रहा था। बाबा भी सबको आओ बच्चे आओ कह लाड प्यार दे रहे थे। बाबा बोले, देखो बच्चे बापदादा के दिल की आशाओं के सितारे हैं। तो जानते हो ना कि बाप की आशायें क्या हैं! बस दृढ़ संकल्प से क्या नहीं हो सकता है। हुआ ही पड़ा है। कल्प कल्प किया ही है। अब रिपीट करना है। फिर बाबा बोले, बच्चों को अब वतन का सैर कराओ। तो बाबा खुद आगे चला और हम सब बहिनें बड़े उमंग से बाबा के साथ-साथ चले। चलते-चलते हम सबको बापदादा एक पहाड़ी पर ले चले और सब आराम से बैठ गये।

बाबा भी हम सब बच्चों के साथ बैठ गये और सबको बहुत हिम्मत और उमंग-उत्साह भरी दृष्टि दे रहे थे। फिर बाबा बोले, अच्छा बाबा अभी आपको रूहानी ड्रिल कराते हैं। सब बड़े खुश हो रहे थे। बाबा ने बोला बाप बच्चों की रिजल्ट देखने चाहते हैं कि अचानक समय आने पर क्या बच्चे पास हो सकते हैं! फिर बाबा ने दृष्टि दी और कहा अब सेकण्ड में मनमनाभव निराकारी अवस्था में टिक जाओ। मन में मेरा बाबा के सिवाए कुछ भी संकल्प और न हो। यह अभ्यास करो तो सभी पुरुषार्थ करने लगे। रिजल्ट में बाबा ने देखा अभी यह अभ्यास और बढ़ाना है। बाबा बोले, अब तो ऐसे अभ्यास करो जो बाबा ने कहा और हुआ वा खुद भी संकल्प किया और हुआ। ऐसे भिन्न-भिन्न स्वरूप 1- आकारी फरिश्ता 2- अशरीरी अवस्था 3- विश्व सेवाधारी बन किरणें देना.... इन सबके लिए ऐसी प्रैक्टिस करो जो सेकण्ड में जो चाहो उसमें स्थित हो जाओ। यह अपने आपस में भी सारे दिन में अभ्यास करते रहो और चेक करो क्योंकि आप बच्चों का पेपर अचानक होना है इसलिए बापदादा ने पहले से ही कहा है, अचानक शब्द और एवररेडी याद रखो। ऐसे चिटचैट करते बाबा हमें बगीचे में ले चला। वहाँ भी सब अपने अपने चबूतरे में बैठ गये। बापदादा सामने थे। सबको दृष्टि देते बाबा बोले, इन मीठे मीठे बच्चों को वतन की सौगात क्या देंगे! बस वतन में तो रूहानी प्यार का जादू है, इतने में देखा कि बहुत सारे बैज बाबा के सामने आ गये। बैज भी न्यारा और प्यारा था। ऊपर पिन में ``मेरा बाबा'' लिखा हुआ था और बैज के अन्दर हार्ट का चित्र था। उसके बीच में शिवबाबा सच्चे हीरे के रूप में बड़ा सुन्दर चमक रहा था, जो बड़ा न्यारा और प्यारा लग रहा था। बाबा ने हर एक को बांहों में लेकर सबको सौगात दिया और कहा यह आपके दिल का चित्र है। एक दिलाराम बाप ही दिल का सहारा, सर्व सम्बन्ध में है, दूसरा न कोई। ऐसे सबको सौगात देते सबको साकार वतनवासी बना दिया।

दादी जानकी को भी इमर्ज किया और बहुत प्यार से अपने में समाए बोले, बच्ची को भी आप सबमें शुभ भावना है कि कोई कमाल करके दिखायेंगे। साथ में सेवा के निमित्त साथियों को भी बैज देकर बहुत-बहुत प्यार किया। ऐसे ही यह दृश्य भी समाप्त हो गया और मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा-ओम् शान्ति।